श्री महावीर महाअर्चना

लेखक

आचार्य प्रज्ञसागर मुनि

प्रसङ्ग

भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव

प्रकाशक

भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (रजि.)

श्री महावीर महाअर्चना

लेखक

आचार्य प्रज्ञसागर मुनि

सम्पादक	:	स्वस्तिश्री सुरेन्द्रकीर्ति स्वामी (पीठाधीश विद्यानंद गुरूकुलम्)
पुण्यार्जक	:	जैन सभा लोधी कॉलोनी (रजि.) (पावन वर्षायोग 2023 के उपलक्ष्य में)
संस्करण	:	2100 प्रतियाँ (23 जुलाई 2023)
पावन प्रसंग	:	भगवान महावीर 2550वाँ निर्वाण महोत्सव
प्रकाशक	:	भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (रजि.)
प्राप्ति स्थान	:	श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय जिनमंदिर, सैक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली मो. 8595972319, 9625184042
मूल्य	:	108 दिवसीय महाअर्चना

मुद्रक : अंकित जैन 'प्रिंस' (पुलक ग्राफिक्स)
शाहदरा, दिल्ली–32, मो. 9810900699, 9810900042

Shree Mahaveer Maha Archana By : Acharya Pragy Sagar

विषयानुक्रमणिका...

1.	आद्यमिताक्षर	04
2.	परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज (संक्षिप्त परिचय)	05
3.	महावीर स्तवनम्	07
4.	मंगल पाठ	08
5.	णमोकार पाठ	08
6.	स्वस्ति तीर्थंकर पाठ	09
7.	श्री महावीर स्वामी पूजा	10
8.	श्री महावीर महाअर्चना	14
9.	वर्धमान मंत्र	38
10.	समुच्चय महाअर्घ्य पाठ	39
11.	शान्ति पाठ	40
12.	विसर्जन पाठ	41
13.	महावीराष्टक दीपार्चनम् (9 दीपकों द्वारा)	42
14.	महावीर दीपार्चन आरती	45
15.	भगवान महावीर आरती	46
16.	वीर प्रार्थना	47
17.	श्री महावीर देशना	48

आद्यमिताक्षर

स्त्रोत, स्तुति, भजन, विनती, भावना आदि आत्मिक भक्ति की अभिव्यक्ति है। अपने आराध्य के प्रति मन में जब महिमा प्रकट होती है तो वह वचन और काया से भी व्यक्त हो जाया करती है। भक्ति भक्त को परमात्मा से सीधे जोड़ती है, जिससे सकारात्मक ऊर्जा अन्दर प्रवाहमान होने लगती है। दिल और दिमाग एक हो जाता है। शरीर पूर्ण स्वस्थता को प्राप्त हो जाता है।

व्यवहार भक्ति के माध्यम से निश्चय भक्ति के द्वारा अजरता-अमरता का अमृतानन्द रूप झरना अन्दर बहने लगता है।

पूज्य गुरुदेव **राष्ट्रसंत परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज द्वारा भगवान महावीर स्वामी का 2550 वाँ निर्वाण महोत्सव** राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जा रहा है। जनसाधारण में महती प्रभावना के लिए पूज्य गुरुदेव ने अभी तक अनेकों कार्य किये हैं।

सभी लोग प्रभु से जुड़ सके इस हेतु श्री दिगम्बर जैन मन्दिर लोधी रोड़ में **'श्री महावीर महाअर्चना'** की सुन्दर रचना की है, जिसमें 108 अर्घ्य द्वारा महावीर भगवान के गुणानुवाद किया गया है। हर मंदिर-हर घर में श्री वीर प्रभु की महाअर्चना हो इस उद्देश्य से यह रचना की गई है। मुझे विश्वास है कि सभी भक्तगण इस महाअर्चना का लाभ लेंगे, पुण्य कमायेंगे।

–मुनि विनिबोध सागर

परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर जी मुनिराज

(संक्षिप्त परिचय)

भारत देश की संस्कार धानी जबलपुर के पास स्थित एक गाँव कुम्भी सतधारा में शरद पूर्णिमा के पावन दिन 14 नवम्बर 1978 को श्रीमति मालती जी एवं श्रीमान खेमचन्द्र जी जैन के आंगन में एक नन्हें बालक ने जन्म लिया, मानो ऐसा प्रतीत हुआ कि बालक नहीं साक्षात चाँद ही धरती पर आ गया हो। दीपावली की पूर्णिमा में जन्म लेने से सभी ने बालक को दीपक कुमार के नाम से पुकारना शुरू कर दिया और प्यार से सभी (गुड्डू) पुकारने लगे। माता-पिता के ऐसे संस्कार पड़े कि पूर्णिमा का चाँद चमकता हुआ 15 सितम्बर 1996 को ग्रह त्याग कर संयम साधना के मार्ग पर निकल पड़ा।

ऐसा वैराग्य रहा कि बहन ज्योति, रोशनी, आरती किसी की नहीं सुनी और वैराग्य की राह पर बढ़ते हुए भिण्ड नगर की धरा पर मुकुट सप्तमी के

पावन दिन गणाचार्य श्री विराग सागर जी के चरणों में वस्त्र त्यागने का निर्णय किया, जिस आत्मा को वस्त्र भी भारी लगने लगे वह स्वभाविक ही महापुरुष ही होगा।

गुरुदेव का आशीष मिला और सम्पूर्ण वस्त्रों को त्यागकर मात्र एक लंगोट में ऐलक विकर्ष सागर नाम से जग में पहचाने लगे, फिर भी मन नहीं माना वैराग्य जो था। अब एक लंगोट भी शरीर को भारी लगने लगी। फिर 8 जून 2003, ललितपुर की पावनधरा में पुनः आचार्यश्री विराग सागर जी का आशीष मिला। 28 मूलगुणों को पालन करते हुए दिगम्बरत्व भेष को धारण कर सम्पूर्ण भारत में अहिंसादूत बन, भ्रमण करते हुए भारत की राजधानी में पदार्पण किया।

वहाँ पर एक महान तपस्वी जिन्होंने जैनधर्म को एक नई पहचान दी, राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानंद जी महामुनिराज। उनके दर्शन किए और समर्पण भाव से शिक्षा प्राप्त की। समर्पण भाव को देखते हुए अक्षय तृतीया 16 मई 2010 ऋषभ बिहार दिल्ली में उपाध्याय पद के संस्कार आचार्य विद्यानंद जी गुरुदेव के कर कमलों से हुए और एक नए नाम उपाध्याय प्रज्ञसागर जी मुनिराज से जन-जन में पहचाने जाने लगे। गुरुदेव ने योग्यता देखी 29 जुलाई 2012 को एलाचार्य एवं 23 अप्रैल 2017 को आचार्य पद के संस्कार किए गए।

लेकिन पद मिलने के बाद भी गुरु भक्ति अपार रही तो गुरुदेव की कृपा फिर हुई और उन्होंने अपनी परम्परा का निर्वाहन करने की जिम्मेदारी दी। आज समपूर्ण विश्व राष्ट्रसंत, अंतेवासी, पट्टपरम्पराचार्य से जग में विख्यात है।

–अनिकेत जैन
(संघस्थ)

पं. आशाधर जी विरचित

श्री महावीर स्तवनम्

सन्मति-जिनपं सरसिज-वदनं, सञ्जनिताखिल-कर्म-कमथनम्।
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥1॥

वीर-भवोदधि-पारोत्तारं, मुक्ति-श्री-वधू नगर-विहारम्।
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥2॥

द्विर्द्वादशकं तीर्थ-पवित्रं, जन्माभिष-कृत-निर्मल-गात्रम् ॥
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥3॥

वर्धमान-नामाख्य-विशालं, मान-प्रमाण-लक्षण-दशतालम्।
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥4॥

शत्रु-विमथन-निकट-भट-वीरं, इष्टैश्वर्य-धुरी-कृत-दूरम ॥
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥5॥

कुण्डलपुरि सिद्धार्थ-भूपालं, तत्पत्नी प्रियकारिणि-बालम्।
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥6॥

तत्कुल-नलिन-विकाशित-हंसं, घाति-पुरोऽघातिक-विध्वंसम् ॥
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥7॥

ज्ञान-दिवाकर-लोकालोकं, निर्जित-कर्माराति-विशोकम्।
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥8॥

बालत्वे संयम-सुपालितं, मोह-महानल-मथन-विनीतम्।
पद्मसरोवर-मध्य-गजेन्द्रं, पावापुरि-महावीर-जिनेन्द्रम् ॥9॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरौं नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ॥1॥

मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हन्त देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव ॥2॥

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय ॥3॥

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म ॥4॥

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल नाथूराम यह, भव सागर दृढ़ पोत ॥5॥

॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि ॥

णमोकार पाठ

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रोभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा–अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,

साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

अपराजित मंत्रोऽयं, सर्व - विघ्न - विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलमं मतः ॥1॥
एसो पंच - णमोयारो, सव्व - पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥2॥

(पुष्पांजलि क्षिपामि)

स्वस्ति तीर्थंकर पाठ

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसंभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनंदनः ॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः ॥
श्रीपुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः ॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः ॥
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः ॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः ॥

(इति जिनेन्द्रस्वस्ति मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि)

पं. द्वीपचंद विरचित

श्री महावीर स्वामी पूजा

अच्युत स्वर्ग त्याग कर आप, त्रिशला माता गर्भ मँझार।
कुण्डपुरी सिद्धारथ नृप सुत, भए वीर तुम जगदाधार ॥
वय कुमार दीक्षा दैगम्बर, ले दुद्धर तप कियो अपार।
केवल लहि भवि भव-सर तारे, कर्म नाश भये शिव-भर्तार ॥1॥

(दोहा)

नाथ वंश नायक हरी-लक्षण चरम जिनेश।
आय तिष्ठ ममहृदय में, काटो कर्म कलेश ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामिन् अत्रावतरावतर संवौष्ठ (इत्याह्वानम्)।

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)।

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्
(इति सन्निधिकरणम्)।

(अथाष्टकम्)

मणिझारी प्रासुक जल लाय, पूजत जन्म जरा मृतु जाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरू हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगदगुरू हो, जय जगनाथ जगद्गुरू हो ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय
जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर सँग चन्दन घिसवाय, पूजत भव-आताप नशाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने संसार-ताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता-फल सम अक्षत लाय, पूजत जिन अक्षय पद पाया।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने अक्षय-पद-प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर तरू सम शुचि सुमन मँगाय, पूजत मन्मथ जाय-नशाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर-स्वामिने काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि नैवेद्य मधुर बनवाय, पूजत क्षुधा रोग मिट जाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाती घृत कपूर जराय, आरति करत मोह-तम जाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगन्ध दशों दिशि छाय, खेवत अष्ट कर्म-जर-जाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने मम अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

घ्राण नयन रसना सुखदाय, फल से पूजूँ अमर फल पाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो□
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने महामोक्ष-फल-प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ किये वसु द्रव्य मिलाय, पूजत आवागमन नशाय।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो□
पूजूँ वीर महा अति वीर, वर्द्धमान सन्मति गुणधीर।
जगद्गुरु हो, जय जगनाथ जगद्गुरु हो ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने अनर्घ्य-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पञ्च कल्याणक अर्घ्य)

(दोहा)

सुदि आषाढ़ षष्ठी तिथी, त्रिशला गर्भ मँझार।
आए अच्युत स्वर्ग तज, हर्षे सुर नर-नार ॥1॥

ॐ ह्रीं अषाढ-शुक्ल-षष्ठभ्यां श्री महावीर-स्वामिने गर्भ-मङ्गल-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र सुदी तेरस तिथी, जगजीवन सुखदाय।
वीर जन्म उत्सव कियो, सुरपति गिरिपति जाय ॥2॥

ॐ ह्रीं चैत्र-शुक्ल-त्रयोदश्यां वैशाली-कुण्डपुरे श्री महावीर-स्वामिने जन्म-मङ्गल-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगसिर वदि दशमी लखें, जग-तन-भोग असार।
नवे आए तब देव ऋषि, वीर लियो तप धार ॥3॥

ॐ ह्रीं मार्गशीर्ष-कृष्ण-दशम्यां श्री महावीर-स्वामिने तपो-मङ्गल-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित बैसाख दशमि किये, घात घाति अरि वीर।
केवल लहि दे देशना, हरी जेत जिय पीर ॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाख-शुक्ल-दशम्यां श्री महावीर-स्वामिने केवलज्ञान-मङ्गल-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदी अमावस कार्तिकी, दीपावली कद्दाय।
पावा वन हन शेष विधि, भए भुवन त्रय राय ॥5॥

ॐ ह्रीं कार्तिक-कृष्ण-अमावस्यायां पावा-नगरे श्री महावीर-स्वामिने मोक्षपद- मङ्गल-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य प्रज्ञसागर विरचित

श्री महावीर महाअर्चना

मंगलाचरण

महावीर जिनदेव नमि, अतिशय गुण विस्तार।
भाव सहित पूजा करूँ, शुद्ध त्रियोग संभार ॥
सिद्ध क्षेत्र पावापुरी, पाया पद निर्वाण।
महावीर भगवान को, शत-शत करूँ प्रणाम ॥

प्रथम वलय गुणावली

परमशांति मंगल तुम्हीं, आनंद के रस खान।
पाप नशे तुम पूजते, महावीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम मंगल शांति पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

मरण कष्ट को टार कर, अमर भये तुम वीर।
तातें में पूजा करूँ, बनूँ स्वयं महावीर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अमर पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

विघ्न विनाशक वीर तुम, सबलनि सुख दातार।
सब संकट पल में कटे, तुम्हीं मुक्ति आधार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं विघ्न विनाशक मुक्ति दातार पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

पतित बहुत पावन किये, जग में वीर महान।
जिन शासन की शान तुम, सदा नमूँ उर आन ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पतितोद्धारक पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

लघु गुरु सब जीव के, रक्षक हैं वीरेश।
शरणागत प्रतिपाल कर, बने आप तीर्थेश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थेश पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

धर्मचक्र जग में फिरे, धर्मधुरा भगवान।
वीरधरम में जो रमे, पहुँचावे शिवथान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मधुरा पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

भव्य जीव पूजत चरण, पावे पद निरवाण।
भव सागर में न भ्रमें, पाकर तेरा थान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पूज्य चरण पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

परम सुगुण से पूर्ण हो, मैं अवगुण की खान।
सब जीवन हितकार हो, महावीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम सुगुण पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

महाअर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्कैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे महावीरमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टगुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

द्वितीय वलय गुणावली

भोग विषय कषाय हैं, अन्तर शत्रु महान।
जीत लिया अरु जिन भये, नमूँ वीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनपद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

राग, द्वेष अरु मोह को, जीत भये परधान।
ताते नाम जिनेन्द्र है, नमूँ वीर धरि ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनेन्द पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

इन्द्रादिक पूजत चरन, पूँजत है तिहुं काल।
मुनि-गणधर श्रुतकेवली, नमत सदा धर भाल ॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक पूज्य पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

चउकर्मादिक नष्टकर, पाया पद जिनदेव।
ध्यान करे जो तुम विषे, वीर बने स्वयमेव ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरहंत पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

नमत सुरासुर वीर पद, तीन काल धरि ध्यान।
शिर झुकाकर में नमूँ, पाने शिवसुख थान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं शिवसुख प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

ज्ञाता दृष्टा रूप तब, निज आतम विश्राम।
प्रकट करूँ यह रूप मम, बारम्बार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाता दृष्टा स्वरूप प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

शाश्वत सुख की संपदा, शाश्वत आतमराम।
प्राप्त किया जिन वीर ने, तिनको करूँ प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं शाश्वत सुख प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

दोष अठारह बीच में, घिरा पड़ा मैं देव।
दोष रहित मुझको करो, वीरप्रभु जिनदेव ॥

ॐ ह्रीं अर्हं नमः निर्दोष पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

चौसठ विद्या के धनी, तीन लोक के ईश।
वीर प्रभु की भक्ति में, झुका चरण में शीश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुषष्ठी ऋद्धि प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

सर्वलोक तारण तरण, सर्वलोक विख्यात।
वीर महा अतिवीर हैं, पूजत पाप नशात ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

क्षय रहित अक्षय हुए, अक्षर सम भगवान।
भक्त चरण को पूँजते, निज आतम कल्यान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयपद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

इन्द्रिय वश करके किया, निर्मल शुद्धोपयोग।
वीर प्रभु के भक्त को, मिले आप संयोग ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रिय पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

तीन लोक में ज्येष्ठ हो, वीर जिनेश्वर आप।
चरण शरण में बैठकर, करें आपका जाप ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

मंगल मूर्ति परम पद, वीतराग विज्ञान।
हरो अमंगल विश्व का, महावीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामंगल पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

लोकोत्तम जग में प्रभु, मधुर प्रिय वाणी।
सर्वोत्तम पद पा लिया, वर्द्धमान जिन स्वामी ॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तम पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

जग अशरण है जानकर, कीना आतम ध्यान।
पूर्णज्ञान को प्राप्त कर, नमो पूज्य भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्तमशरण पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

महाअर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्कैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे महावीरमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशगुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

तृतीय वलय गुणावली

कर्म जीतकर पा लिया, सिद्धालय का राज।
वीर प्रार्थना से मुझे, मिले मुक्ति का ताज ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आत्म विजय पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

नमन करूँ महावीर को, परमागम को ध्याय।
सिद्धश्रुत भक्ति करूँ, शत-शत शीश नवाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमागम ज्ञान प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

महावीर के ज्ञान में, लोक अलोक झलकाए।
श्री सर्वज्ञ कहे सभी, चरनन शीश नवाए ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञ पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

नयनन पथगामी प्रभु, महावीर भगवान।
नयनो में विचरण करों, सदा वसो उर आन ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान नेत्र प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

नाम लेत शांति मिले, मन का ताप नशाय।
वीर दिव्य दीपक तुम्हीं, मेटो करम कषाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यज्ञान दीपक प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

रत्नत्रय को साधकर, वीर भये भगवान।
प्रकटे मुझमें भी यही, निज में निज परिणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं रत्नत्रय धर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

सर्वव्यापि परमातमा, विश्व पूज्य विख्यात।
वर्द्धमान को नित नमूँ, विनय सहित निज माथ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोक पूज्य पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

जनम-मरण दुख जीतकर, जीवन मुक्त कहाय।
नमूँ वीर परमातमा, भवदुख सहज नशाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जीवन मुक्त पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

परम धर्म उपदेश कर, प्रगटाया शिवधाम।
'सर्वोदय' जिन तीर्थ का, जग में बड़ा है नाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वोदय तीर्थ प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

मिथ्यातम को नाशकर, तत्वज्ञान प्रगटाय।
ऐसे प्रज्ञ महावीर की, वास करे उर आय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वज्ञान प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

जहाँ न दुख का लेश है, जहाँ न मिथ्याज्ञान।
तुम विन कहीं न श्रेष्ठता, महावीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रेष्ठ पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥11॥

इन्द्रादिक पूजत चरन, वीर भक्ति उरधार।
मैं भी पूजन नित करूँ, जाने भव से पार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाभक्ति प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

मुनि मन निर्मल तुम करो, तुम्हीं सुख के धाम।
तुमको अंजुलि जोड़कर, शत-शत करूँ प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व सुख प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

तीन लोक हितकार हो, हृदय बड़ा विशाल।
भव्यों के आनंद तुम, वंदू दीनदयाल ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वानंद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

समता सुख में मगन है, राग, द्वेष न क्लेश।
साम्य भाव मैं भी धरूँ, बन जाऊँ वीरेश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं समता सुख प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

दिव्यामृत गंगा तेरी, नित करती कल्लोल।
वीर प्रभु की वाणी से, अन्तस् के पट खोल ॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यज्ञान प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

काया स्वर्ण समान है, चन्द्र समान है रूप।
वीर भक्ति जो भी करे, पावे आत्म स्वरूप ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आत्मस्वरूप प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

पंचकल्याणक युक्त है, पंचम गति आसीन।
तुम गुण गण गावत सदा, मुनि गणधर प्रवीन ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तवगुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

वीतराग सर्वज्ञ हैं, सर्वजीव हितकार।
महावीर भगवान ही, मुक्ति के दातार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अरहंत पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

शुद्ध अनंत चतुष्ट गुण, धारण करे महान।
मन-वच-काया से नमूँ, स्वयं बनूँ भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत चतुष्ट गुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

अनागार आगार के, उद्धारक महावीर।
जिन-जिन ने शरणा धरी, हरली भव की पीर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाव्रत प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

तुम देवन के देव हो, महावीर भगवान।
चरणन रज पाने प्रभु, तुमपद करूँ प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं देवाधि देवपद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

ज्यों शशि किरण प्रकाश है, त्यों प्रभु निर्मल ज्ञान।
प्रणमूँ नित तव कमल पद, पाने केवलज्ञान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञान प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

दुर्निवार है मोह बल, निज आतम बल तेज।
जीत लिया महावीर ने, पाया मोक्ष विशेष ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षपद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

जिसका कभी न नाश हो, सो पायो आनन्द।
त्रिशला के महावीर ने, पाया सहजानन्द ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहजानन्द प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥

निज आतम में लीन है, साँचा जग में नाम।
सरव जीव तिहुं लोक के, नाथ करन परणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोकेश्वर पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥

धर्मचक्र सन्मुख चले, मिथ्यामल नशजात।
धर्म सभा नायक प्रभु, पूजत हम दिनरात ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मचक्राधिपति पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

तुम समान नहिं देव है, तारण तरण जिहाज।
चरणाम्बुज सेवत सकल, जैन अजैन समाज ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तारणतरण जिनदेव क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥28॥

चार संघ नायक प्रभु, देते मोक्ष प्रकाश।
पूजा सेवा नित करूँ, बनकर वीर का दास ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुसंघ नायक पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥29॥

तीन लोक विख्यात हैं, तारण तरण जिहाज।
तुम सम कोई वीर ना, तुम सबके शिरताज ॥

ॐ ह्रीं अर्हं भव तारण-तरण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥30॥

मिथ्यातम से अन्ध थें, सर्वलोक के जीव।
सम्यग्ज्ञान के दीप से, जग को किया प्रदीव ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तत्त्वज्ञान प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥31॥

निज से निजका ध्यान कर, पाया मुक्तिधाम।
ऐसे श्री महावीर को, बारम्बार प्रणाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तिधाम प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥

महाअर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्कैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे महावीरमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं बत्तीसगुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चतुर्थ वलय गुणावली

मिथ्यामति सन्मति हुई, जग में बने महान।
सत्-सत् मति सन्मति बनूँ, बनूँ स्वयं भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सन्मति पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥1॥

अनंत चतुष्टय नित लखे, रहते आतम लीन।
भक्तिवश गुणथुति करूँ, पाने मोक्ष प्रवीन ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंत चतुष्टय गुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥2॥

प्रातिहार्य वसु सहित तुम, दिखते बड़े अभिराम।
प्रतिसमय अतिशय करे, आकरषन के धाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्ट प्रातिहार्य प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥3॥

सोलह भावन भाव से, तीर्थंकर महावीर।
करम निर्जरा के लिए, कीना तप गंभीर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकर पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥4॥

जगत्बंधु करुणा सागर, जग जन के उद्धारक हो।
जिन शासन की महिमा के, सूरज सम परकाशक हो ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म प्रवर्तक पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥5॥

जिओ और जीने दो का, जगजन को संदेश दिया।
सत्य अहिंसा फैले जग में, भविजन को उपदेश दिया ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्य अहिंसा धर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥6॥

वीर प्रभु निज शक्ति दो, धरूँ दिगम्बर भेष।
मोक्ष महल में वास कर, रहूँ सदा स्वदेश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिगम्बर भेष प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥7॥

सुन्दर रूप मनोज्ञ है, मनवश सबका होये।
चरण वंदना वीर की, कर करमन को खोये ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुन्दर स्वरूप प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥8॥

धर्म ध्वजा संसार में, करे वीर यशगान।
जो भवि शीश नमे चरण, सब जगको सुखदान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मध्वजा प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥9॥

सर्वोत्तम अतिश्रेष्ठ है, वर्द्धमान उपदेश।
धर्ममोक्ष मारग कहे, पूजत देश-विदेश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म-मोक्ष सदोपदेश प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥10॥

दिनकर सम परकाश कर, शशि सम दुति स्वयमेव।
वर्द्धमान महावीर तुम, सब देवन के देव ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम देव पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥11॥

हितमित मिष्ट प्रिय वचन, अमृत रस प्रकटाय।
भविजन के तारण तरण, मैं वंदूँ तुम पाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यध्वनि प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥12॥

सर्वलोक कल्याण कर, आप बने महावीर।
करुणा के सागर प्रभु, हर लो भव की पीर।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याण पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥13॥

तीन लोक आराध्य हो, सरवसिद्धि दातार।
तुम सम कोन महान है, करते जग उद्धार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वसिद्धि प्रदायक क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥14॥

स्वयंबुद्ध तुम हो प्रभु, सब जन को संबोध।
पूज्य चरन से हमें मिला, अंतस् मन का शोध ॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्ध पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥15॥

तुम सम न बलवान है, जीता मोह प्रचण्ड।
अनंतबल धारी प्रभु, निश्चल अमल अखण्ड ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतबल प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥16॥

क्षुधा तृषा को आदि ले, मन में क्लेश महान।
नाश किये तुमने प्रभु, भोगत सुख निरवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्वाण पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥17॥

देह धार जीवन मुकत, महावीर भगवान।
चन्दन सम शीतल धरे, महा यतीश्वर जान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महा यतीश्वर पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥18॥

नही ढिगें उपयोग से, शुद्ध धरे परिणाम।
महावीर्य धारक नमूँ, पाने आतमराम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्धोपयोग प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥19॥

श्रावक या मुनिराज हो, धर्म आपसे वीर।
जिन-जिन ने पाला इसे, पाया भवदधि तीर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनधर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥20॥

निज आतम नित रस लहो, करत उसी का भोग।
ऐसे सन्मति को नमूँ, मन वच काय तियोग ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैतन्य भोग प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥21॥

जग में देव बहु दिखे, तुमसा न भगवान।
वीतराग-सर्वज्ञ प्रभु, हित उपदेश महान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत् पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥22॥

द्रव्य-भाव-नोकरम से, नही परिणत हो आप।
निज स्वरूपाचरण में, करते आतम जाप ॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वरूपाचरण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥23॥

शीतल चंदन गंध सब, देहन ताप नशाय।
चेतन शीलत जो करें, जिनवर वीर कहाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम शांत स्वरूप प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥24॥

तन पवित्र हेतु सभी, तीरथ गंग नहाय।
वीर तीर्थ में न्हवन कर, शुद्ध बुद्ध हो जाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीरतीर्थ प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥25॥

क्षत-विक्षत जीवन हुआ, मिला न अक्षयधाम।
सिद्धपद अक्षय मिले, वंदूँ सन्मति नाम ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षय पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥26॥

रत्नत्रय मंडित महा, मिथ्या धरम न लेश।
सु-हित कर संशय हरन, करत धरम उपदेश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक् धर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥27॥

सुर मुनि मन पावन करि, ज्ञान दिवाकर धार।
महावीर सो पूजहूँ, पाने मोक्ष का द्वार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान दिवाकर पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥28॥

ज्ञानादिक गुण सहित है, शोक रहित निःशोक।
वर्द्धमान के ध्यान से, कटे करम संयोग ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानादि अनंत गुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥29॥

पर विभाव का त्यागकर, पाया सहज स्वभाव।
नमो वीर जिन पद अमल, परकृत भाव अभाव ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सहज स्वभाव प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥30॥

तिहूँ काल में न मिलो, सम्यक् धरम महान।
धन्य भाग्य अब जो मिला, नमूँ वीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्यक् धर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥31॥

परम धरम पद ईश हो, सरव धरम तुम शीश।
परम शांति तुम पद मिले, नमूँ नमूँ जगदीश ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जगदीश पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥32॥

परब्रह्म निज आतमा, परम ज्योति निजथान।
परमातम पद पाइयो, नमो वीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमात्म पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥33॥

निर्मल चारित धारकर, पाया आतम ज्ञान।
तिस कारन में भी धरूँ, बनूँ वीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल चारित्र प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥34॥

महावीर परभाव से, जन्म बैरी सिंह-गाय।
अंतर्मन प्रीति जगी, वीर चरण को पाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम अहिंसा धर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥35॥

सरव दरब से भिन्न हैं, नहिं अभिन्न तिहुं काल।
नमूँ वीर परमातमा, एकहि रूप विशाल ॥

ॐ ह्रीं अर्हं एकत्व स्वरूप पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥36॥

अक्षय आनंद भावयुत, करम भाव सब त्याग।
ताते वीर जिनेश को, नमूँ चरण बड़भाग ॥

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयानंद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥37॥

निर्विकार निश्चल प्रभु, निरमल आतम ज्ञान।
निरावरण रवि बिम्ब सम, महावीर भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मल आत्मज्ञान प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥38॥

रागादि परिणाम का, है कारण संसार।
नाश किया महावीर ने, पायो समय का सार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं समयसार प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥39॥

समता संयम साधना, धर कर बने महान।
पथगामी बनूँ वीर का, याते करूँ मैं ध्यान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं समता संयम प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥40॥

एक दृष्टि सबको लखे, इष्टानिष्ट न कोय।
राग-द्वेष निरभाव से, वीर कहावत सोय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वीतराग दृष्टि प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥41॥

ग्रन्थ रहित निर्ग्रन्थ हैं, एकी रूप अनूप।
निष्पृह वीर जिनेश नमूँ, निजानन्द शिवभूप ॥

ॐ ह्रीं अर्हं निष्पृह भाव प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥42॥

भवसागर के तीर हैं, वीरो में महावीर।
मिथ्यातम हर सूर्य हैं, मैं वन्दूँ अतिवीर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानसूर्य प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥43॥

वीर भये परसिद्ध तुम, निज पुरुषारथ साध।
धरम मोक्ष में भी चहूँ, पाने सुख निरबाध ॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्ममोक्ष पुरुषार्थ प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥44॥

माँ त्रिशला के गरभ में, आप रहे समभाव।
अष्ट देवि सेवा करे, दिशदिन भक्ति सुभाव ॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भ कल्याणक प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥45॥

अमृतमय तुम जन्म है, इन्द्र करे अभिषेक।
देखत सुख मन को मिले, नमूँ वीर जो नेक ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्म कल्याणक प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥46॥

पर वैभव को त्यागकर, तप कीना गंभीर।
कठिन तपस्या त्याग से, बने आप महावीर ॥

ॐ ह्रीं अर्हं तप कल्याणक प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥47॥

ज्ञान ज्योति प्रकटाये के, बने आप सर्वज्ञ।
द्वादश सभा के बीच भी, आप रहें आत्मज्ञ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञान कल्याणक प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥48॥

अष्ठ कर्म को नष्टकर, अष्टम वसुधा पाए।
करूँ प्रार्थना वीर से, हमें मुक्ति मिल जाए ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धालय पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥49॥

परम दिगम्बर भेष धर, रखा न कुछ भी साथ।
ध्याऊ पाऊ वीर पद, नमूँ जोर जुग हाथ ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम दिगम्बर रूप प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥50॥

निर्विकार निर्मोह हो, विश्वरूप विख्यात।
उत्तम पद शिवपद लियो, नमूँ वीर कहलात॥

ॐ ह्रीं अर्हं निर्विकार पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥51॥

चहुँ प्रकार के देवता, नित प्रति शीश नमाय।
दिव्य ध्वनि सुन रमन करें, आतम सुख उलसाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम सम्मान पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥52॥

राग द्वेष ममता कहो, मोह कर्म सों होय।
तिस करमन को नाशकर, नमूँ वीर तुम होय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोहकर्म विनाशाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥53॥

हिंसा पीड़ित जीव को, तुम प्रभु देव सहाय।
प्राणीमात्र उपकार कर, उत्तम धर्म बताय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परमोपकार धर्म प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥54॥

वंदन थुति आराधना, जो कुछ भक्ति प्रमान।
तुम ही सबके मूल हो, महावीर वर्धमान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं महाआराधना भाव प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥55॥

धन वैभव तें लोक में, पूरन इच्छा होय।
सुर नरेन्द्र पद पाइये, तुम पूजत हें सोय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सुरेन्द्र नरेन्द्र पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥56॥

सर्वजीव आनंद करि, शुद्ध शुचि आचार।
आप पवित्र पावन भये, करो मेरा उद्धार ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पवित्र पावन भाव प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥57॥

योग साधे योगि भये, करो शुद्ध उपयोग।
धर्म योग मैं भी करूँ, नमूँ वीर तियोग ॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुद्ध योग उपयोग प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥58॥

निज शक्ति बल आप ही, प्रगटो ज्ञान अनंत।
स्वयं सिद्ध महावीर को, नमन होये दुख अंत ॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं शुद्ध सिद्ध पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥59॥

सत्य धर्म दातार हो, सर्वजीव सुखदाय।
तीन लोक पालक प्रभु, नमूँ वीर जिनराय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सत्यधर्म दातार पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥60॥

सर्व जीव पूजन चरन, भाव सहित शिरनाय।
गणधर मुनि धुति करि थके, मैं वंदूँ तिस पाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं सर्व जीवाधिपति पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥61॥

तृष्णा दुख का मूल है तिसे नाश सुख पाय।
मन-वच-तन करि मैं नमूँ, वीर चरण द्वय पाय ॥

ॐ ह्रीं अर्हं निजसुख पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥62॥

परम ज्योति परमात्मा, वर्द्धमान जिनराज।
चरण कमल पूजूँ सदा, आत्म शुद्धि के काज ॥

ॐ ह्रीं अर्हं परम ज्योति परमात्मा प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥63॥

वीरदेव जु अनंतगुण, लिख न सकूँ कम ज्ञान।
भगति वस भक्ति करि, बनूँ प्रज्ञ भगवान ॥

ॐ ह्रीं अर्हं भगवत् पद प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥64॥

महाअर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्कैश्चरू-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिनगृहे महावीरमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चौसठगुण प्राप्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

भक्ति भाव से जो पढ़े, महावीर का पाठ।
सब संकट पल में कटें, होते सार ठाठ ॥
निजभक्ति निजशक्ति से, किया गुणानुवाद।
सिद्धपुरी की भावना, चाहूँ आशीर्वाद ॥
॥ इति पुष्पांजलि क्षिपामि ॥

जयमाला

(दोहा)

काल चतुर्थ के अन्त भए, वीर चरम तीर्थेश।
गाऊँ तिन गुणमालिका, जगहित सुख सन्देश ॥1॥

(सोरठा)

सब द्वीपन सरदार, जम्बू नामा द्वीप में।
दक्षिण भरत मँझार, आरज खण्ड सुहावने ॥2॥
ताके विदेह प्रदेश, कुण्डनगर शोभा लहै।
तहँ सिद्धार्थ नरेश, पालहिं परजा प्रीति ॥3॥

(पद्धड़ी छन्द)

तिस नृप महिषी त्रिशला महान, अति रूपवती गुणगण निधान।
तिन गृह षट् मास अगाऊ सार, सुर रत्नवृष्टि कीनी अपार ॥4॥
इक दिवस रैन पिछली मँझार, शुभ सोल स्वप्न रानी निहार।
जागी पुनि कर मङ्गल सनान, जा पति समीप कीनों बखान ॥5॥
सुन नृपति अवधि में फल विचार, कहि चरम तीर्थङ्कर तव कुमार ।
होसी सुन है मन मुदित मात, जानो नाहीं नव मास जात ॥6॥
शुभ चैत्र शुक्ल तेरस विख्यात, जन्मे ता दिन श्री जगतनाथ।
सुरगिरि तव मघवा न्हवन कीन, पहिराये वसनरू भूषण नवीन ॥7॥
पुनि सौंपे पितु कर हर्ष धार, सुर ताण्डव नृत्य कियो अपार ।
यों जन्मोत्सव आनन्दकार, करि सुरि नर गए निज यान सार ॥8॥
सो दोज चन्द्रवत् बड़े वीर, गुण-बल-विद्या-पुरुषार्थ-धीर।
उस समय धर्म का नाम धार, दुठ करते पशु जवन संहार ॥9॥
सब दिशि दुःखदायक चितकार, हो रही सुनत नहिं कोई पुकार ।
अरु शूद्र वर्ण को पशु-समान, गिन ग्लानि करें अभिमान ठान ॥10॥
इत्यादि होत लख अनाचार, कम्पे हिय में सन्मति कुमार।
तब तुरत हिये वैराग्य धार, जग काम भोग त्यागे अपार ॥11॥

थिर नाहिं जगत में वस्तु कोय, नहिं पतित जीव को शरण कोय ।
नहिं सुखो जगत में कोई जीव, अकला सुख-दुःख भोगै सदीव ॥12॥
तन भी नहिं निज तब कौन और?, तन अशुचि अपावन रोग-ठौर।
कर अथिर योग आस्रव करेय, जो धरै गुप्तित्रय रोक देय ॥13॥
तप संयम से विधि को खपाय, तो त्रिभुवन में फिर नहिं भ्रमाय ।
सब सुलभ बोधि दुर्लभ अपार, सद्धर्म सदा सुख दैनहार ॥14॥
जग में उन जीवन को धिक्कार, जो चर्म गिनत प्राणी संहार ।
तातैं तप संयम व्रत धार, अरि रहस आवरण करूँ क्षार ॥15॥
दृग सुख व्रत ज्ञान अनन्त पाय, सन्मारग सबको दूँ बताय।
इम चिन्तत ही सुर ऋषी आय, थुति कर वैराग्य दियो दिढ़ाय ॥16॥
तब तीस वर्ष की वय कुमार, सिद्धों को करके नमस्कार
तप नग्न कियो बारह प्रकार, प्रभु द्वादश वर्ष सु मौन धार ॥17॥
पुनि क्षपक-श्रेणि आरूढ़ होय, घन घाति चतुष्टय दिये खोय ।
दृग बल अनन्त सुख ज्ञान धार, सब देशन में करके विहार ॥18॥
बिन भेद भाव उपदेश कीन, अलितन पतितन आश्रय सु दीन ।
अरू धर्म अहिंसा धुज प्रसार, निर्भय कीने जब जिय अपार ॥19॥
पुनि सम्यक् दृढ़ व्रत ज्ञान जोय, मिल तीनों शिव-मन कहे सोय।
तत्त्वार्थ यथा आतम श्रद्धान, जो धरे सोई सम्यक्त्ववान ॥20॥
ता सहित ज्ञान चारित्र धार, लघु पावै विधि हर मोक्ष द्वार ।
चारित्र बतायो दो प्रकार, अनगार सकल विकलहिं सगार ॥21॥
इम देत देशना कर पयान, आए पावापुरि के उद्यान।
कार्तिक वदि मात्र भइ प्रसिद्धि, जा दिन पाई प्रभु मोक्ष- ऋद्धि ॥22॥

ताही दिन गौतम गणी सार, पाई केवल-निधि घाति टार।
दो उत्सव सुर नर किये आय, सो दिवस दिवाली जग मनाय ॥23॥

(दोहा)

जग-हित कर निज-हित कियो, 'दीप' चरम जिनराय।
मैं हूँ तिन पद आश धर, पूजूँ अर्घ चढ़ाय ॥24॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर-स्वामिने जयमाला-सम्पूर्ण महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छन्द)

जो गावै गुण वीर हर्ष उर धारिके,
पूजैं शक्ति प्रमाण द्रव्य वसु लायके।
सो पावै सुर सौख्य बहुरि नर-भव धरैं,
तप-संयम आराध 'दीप' शिव-तिय वरैं ॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत् ॥

वर्द्धमान मंत्र

णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहेण वा सव्वजीव सत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा।

(9 बार जाप करे)

आचार्य श्री का अर्ध्य

पूज्य गुरुदेव न होते तो आज क्या होता।
सत्य दर्शन का सूर्य अस्त हो गया होता ॥
मिले सौभागय से जो आप परम उपकारी।
पूज्य चरणों में बार-बार वंदना मेरी ॥

ॐ हूँ श्री परमपूज्य आचार्य शांतिसागर तत्शिष्य आचार्य देशभूषण तत्शिष्य आचार्य विघानन्द तत्शिष्य आचार्य प्रज्ञसागर जी मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महाअर्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों ॥
अरहंत भाषित वैन पूजूँ, द्वादशांग रचे गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरुचरण, शिवहेत सब आशा हनी ॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडस रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा ॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ ॥
कैलाश श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा ॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय, होय पति शिव गेह के ॥

दोहा

जल गन्धाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ बहु विधि भक्ति बढाय ॥

ॐ ह्रीं भाव पूजा, भाव वन्दना, त्रिकाल पूजा, त्रिकाल वन्दना, करै, करावै, भावना भावै श्री अरहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चराणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्य चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर-नगरी विषै, उर्ध्वलोक मध्यलोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय स्थित जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्र विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत दसक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो नमः। नन्दीश्वर द्वीप स्थित बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः।

पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। श्री सम्मेद शिखर, कैलाश गिरी, चम्पापुरी, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैन बद्री, मूल बद्री, राजग्रही शत्रुंजय, तारंगा, कुण्डपुर, सोनागिरि, ऊन, बड़वानी, मुक्तागिरी, सिद्धवरकूट, नैनागिर आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। तिजारा, बड़ेगांव, दिल्ली द्वारका रत्नत्रय जिनमंदिर अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री गौतमस्वामी, कुन्दकुन्दाचार्य श्रीचारण ऋद्धिधारीसात परम ऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तभ्यः सर्वेभ्यो महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै॥
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी॥
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमों शांति हित शान्ति विधायक॥
दिव्य-विटप पुहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी॥
शांति जिनेश शान्ति सुखदायी, जगतपूज्य पूजौं शिरनाई॥
परम शान्ति दीजे हम सबको, पढ़ै तिन्हैं पुनि चार संघको॥

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिए करहिं शान्ति सदा अनूप॥

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा-प्रजा-राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शान्ति को दे॥
होवे सारी प्रजा को सुख बलयुत हो धर्म-धारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पे तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा॥
होवे चोरी ना जारी, सुसमय वरते, हो न दुष्काल भारी।
सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको, जो सदा सौख्यकारी॥

दोहा

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शान्ति करें सब जगत में, वृषभादिक जिनराज॥

(यह पढ़कर झारी में जल चन्दन की धारा तीन बार छोड़े)

(छन्द मन्दाक्रान्ता)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृतों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलौं सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जौलौं न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहौं प्रभु, जबलौं पाया ना मुक्ति पद मैंने॥
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुडाहु भव दुख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तब चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करें भगवान॥
मंत्रहीन, धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिन देव।
क्षमा करहुँ राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥

(9 दीपकों द्वारा घर या मंदिर में दीपार्चन करें)

श्री महावीराष्टक दीपार्चनम्

अज्ञान तिमिर नाशक, बुद्धि वृद्धि कारक
Destroyer of ignorance, intelligence booster

(शिखरिणी छन्द)

यदीये चैतन्ये, मुकुर इव भावाश्चि-दचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्त-रहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो-भानु-रिव यो,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठादस-बुद्धी-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अज्ञान तिमिर विनाशनाय केवलज्ञान-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥1॥

अशुद्ध दर्शन नाशक, नेत्र ज्योति प्रदायक
Destroyer of impure vision, provider of eye sight

अताम्रं यच्चक्षुः, कमल-युगलं स्पन्द-रहितं,
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
स्फुटं मूर्ति-र्यस्य, प्रशमित-मयी-वाति-विमला,
महावीर- स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो णव-चारण-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अशुद्ध-दर्शन-विनाशनाय केवलदर्शन-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥2॥

इन्द्रिय सुख-दुःखाभाष नाशक, अक्षय सम्पदा कारक
Destroyer of sensory pleasure and pain, inexhaustible wealth factor

नमन्नाकेन्द्राली-मुकुट - मणि - भा - जाल-जटिलं।
लसत्पादाम्भोज-द्वय-मिह यदीयं तनुभृताम् ।
भवज्वाला-शान्त्यै, प्रभवति जलं वा स्मृत-मपि,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो ति-बल-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय इन्द्रिय-सुख-दुःखाभाष-विनाशनाय अव्याबाध-गुण-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥3॥

मोहान्धकार नाशक, सर्वकार्य-सिद्धि कारक
Destroyer of delusion, factor of accomplishment

यदर्चा-भावेन, प्रमुदित मना दर्दुर इह,
क्षणादासीत्-स्वर्गी, गुण-गण-समृद्धः सुख-निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः, शिव-सुख-समाजं किमु तदा,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो एगादस-विक्किया-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय, श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय अनन्तसुख प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥4॥

जन्म रोग नाशक, आरोग्यता कारक
Destroyer of birth killer, curative agent

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यगत - तनु - ज्ञान - निवहो,
विचित्रात्माप्येको, नृपति-वर-सिद्धार्थ तनयः।
अजन्मापि श्रीमान्, विगत-भव-रागोऽद्भुत-गतिर-,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्त-तप-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय जन्म-रोग-विनाशनाय सूक्ष्मत्व-गुण-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥5॥

नानाविध शरीर रचना नाशक, परम सौन्दर्य कारक
Various body composition destroyers, ultimate beauty factor

यदीया वाग्गङ्गा, विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनतां या स्नपयति।
इदानी-मप्येषा, बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठ-ओसहि-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नानाविध-शरीर-रचना-विनाशनाय अवगाहनत्व-गुण-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥6॥

गुरु-लघु भव पद नाशक, सर्वोत्तम पद दायक
Destroyer of complexes, bestower of Acme position

अनिर्वा - रोद्रेकस् - त्रिभुवन - जयी काम - सुभटः,
कुमारावस्थाया-मपि निज-बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्-नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ॥7॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो चदु-रस-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय गुरु-लघु-भव-पद-विनाशनाय अगुरु-लघु-गुण- प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥7॥

सर्वविघ्न-भय नाशक, अपराजित पद प्रदायक
Destroyer of fear, undefeated post supplier

महामोहातङ्क - प्रशमन - पराकस्मिक - भिषग्,
निरापेक्षो बन्धु-र्विदित-महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां, भव - भय - भृता - मुत्तम - गुणो,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो दु-अखीण-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय सर्वविघ्न-भय विनाशनाय अनन्त-बल-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥8॥

अष्ट कर्म नाशक, सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक
Ashta Karma Destroyer, all Riddhi-Siddhi Provider

(अनुष्टुप छन्द)

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छ्-णुयाच्-चापि, स याति परमां गतिम् ॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व-रिद्धि-सिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय अनर्घ्य-पद-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा ॥9॥

प्रस्तुति : आचार्य प्रज्ञसागर

महावीर दीपार्चन आरती

(कविवर द्यानत जी)

करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान-थान की ॥टेक॥
राग बिना सब जग-जन तारे, द्वेष बिना सब करम विदारे ॥1॥
शील-धुरन्धर शिव-तिय-भोगी, मन-वच-काय न कहिये योगी ॥2॥
रत्नत्रय-निधि परिग्रह-हारी, ज्ञान-सुधा-भोजन-व्रतधारी। ॥3॥
लोक-अलोक व्याप निज माही, सुखमय इन्द्रिय-सुख-दुःख नाही ॥4॥
पंच कल्याणक-पूज्य विरागी, विमल दिगम्बर अम्बर त्यागी ॥5॥
गुन-मुनि-भूषन-भूषित स्वामी, जगत उदास जगत्रय स्वामी ॥6॥
कहै कहाँ लौ तुम सब जानौ, 'द्यानत' को अभिलाष प्रमानौ ॥7॥

भगवान महावीर आरती

ॐ जय महावीर प्रभो, स्वामी जय महावीर प्रभो।
कुण्डलपुर अवतारी, त्रिशलानन्द विभो ॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

सिद्धारथ घर जन्मे, वैभव था भारी।
बाल ब्रह्मचारी व्रत, पाल्यौ तपधारी ॥1॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

आतम ज्ञान विरागी, सम दृष्टि धारी।
माया मोह विनाशक, ज्ञान ज्योति जारी ॥2॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

जग में पाठ अहिंसा, आपहि विस्तायों।
हिंसा पाप मिटाकर, सुधर्म परिचायों ॥3॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

इह विधि चाँदनपुर में, अतिशय दरशायो।
ग्वाल मनोरथ पूर्यो, दूध गाय पायो ॥4॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

अमरचन्द को सपना, तुमने प्रभु दीना।
मन्दिर तीन शिखर का, निर्मित है कीना ॥5॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

जयपुर नृप भी तेरे, अतिशय के सेवी।
एक ग्राम तिन दीनों, सेवा हित यह भी ॥6॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

जो कोई तेरे दर पर, इच्छा कर आवे।
होय मनोरथ पूरण, संक मिट जावे ॥7॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

निशि दिन प्रभु मन्दिर में, जगमग ज्योति जरै।
हम सेवक चरणों में, आनन्द मोद भरै ॥8॥

ॐ जय महावीर प्रभो...

आचार्य प्रज्ञसागर विरचित

वीर प्रार्थना

वीर मंगल वीर उत्तम वीर शरणं बोल।
वीर प्रभु के नाम से तू, अपना मौन खोल ॥
जय वीरा जय वीरा जय महावीरा बोल ।
महावीर के नाम से तू, अपना मौन खोल ॥टेक॥

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल हो ।
वीर कृपा से सबका जीवन, अर्हम् अर्हम् हो ॥
वीर प्रभु के ध्यान से, तू अंदर के पट खोल... ॥1॥

सुबह-शाम नाम लेना, एक मेरा काम ।
तेरे चरणों में ही मेरे, सारे तीरथ धाम ॥
वीर प्रभु की वाणी सुनले, ये अमृत से बोल... ॥2॥

वीर प्यारा, जग से न्यारा, सबका एक सहारा है।
जो भी इनकी शरण में आया, उनको मिला किनारा है ॥
जग में सबका मोल, लेकिन वीरा तो अनमोल... ॥3॥

विघ्न विनाशक, संकट हारक, वो सबका महावीर ।
बिन बोले जो हर लेते हैं, सबके मन की पीर ॥
वीर प्रभु की माला जपके, आनन्द का रस घोल... ॥4॥

कंकर भी शंकर बन जाता, तेरे जहां पड़े चरण।
जो भी तेरे दर पे आता, सबको मिलता समवशरण ॥
जीओ और जीने दो जिनके, बोल हैं अनमोल... ॥5॥

तू ही चंदा, तू ही सूरज, तू ही जग उजियारा है।
तू ही सागर, तू ही किनारा, तू ही सबका सहारा है।
तू ही सबमें, सबमें तू ही, गजब तेरा है रोल... ॥6॥

श्री महावीर देशना

- ❊ **जीव रक्खणं धम्मो** – जीव की रक्षा करना धर्म है।
- ❊ **अहिंसा परमो धम्मो** – अहिंसा परम धर्म है।
- ❊ **अप्पदीवो भव** – स्वयं प्रकाशित हो ।
- ❊ **चारित्तं खलु धम्मो** – चारित्र ही धर्म है।
- ❊ **दंसण-मूलो धम्मो** – सम्यग्दर्शन धर्म का मूल है।
- ❊ **धम्मो अहिंसा लक्खणं** – अहिंसा धर्म का लक्षण है।
- ❊ **विणयो मोक्ख-द्दारं** – विनय मोक्ष का द्वार है।
- ❊ **समओ सव्वत्थ सुंदरो लोगे** – आत्मा ही लोक में सर्वत्र सुन्दर है।
- ❊ **आदा हु मे सरणं** – आत्मा ही मेरी शरण है।
- ❊ **णाणेण पवज्जा** – ज्ञान ही प्रव्रज्या (दीक्षा) है।
- ❊ **अज्झयण-मेव-झाणं** – अध्ययन ही ध्यान है।
- ❊ **णाणेव झाण-सिद्धी,**
  झाणेण मोक्ख-सिद्धी – ज्ञान से ध्यान की सिद्धि और ध्यान से मोक्ष की सिद्धि होती है।
- ❊ **णाणमेव पयासं** – ज्ञान ही प्रकाश है।
- ❊ **वत्थु सहावो धम्मो** – वस्तु का स्वभाव धर्म है।
- ❊ **रयणत्तं च धम्मो** – रत्नत्रय धर्म है।
- ❊ **ण धम्मो धम्मियेण विणा** – धर्म बिना धार्मिक नहीं और धार्मिक बिना धर्म नहीं ।
- ❊ **अण्णण्णोवयारो जीवाणं** – परस्पर उपकार करना जीवों का धर्म है।
- ❊ **णिग्गंथो हि मोक्ख-मग्गो** – निर्ग्रन्थता ही मोक्षमार्ग है।
- ❊ **अज्झयणेण विणा झाणं णत्थि,**
  झाणे अज्झयणं णत्थि – अध्ययन बिना ध्यान नहीं, ध्यान में अध्ययन नहीं।
- ❊ **संसारेण विणा णिव्वाणं णत्थि,**
  णिव्वाणे संसारे णत्थि – संसार बिना निर्वाण नहीं, निर्वाण में संसार नहीं।
- ❊ **ज्ञानात् त्यागः, त्यागात् शान्तिः** – ज्ञान से त्याग और त्याग से शान्ति।
- ❊ **जीओ और जीने दो ।**